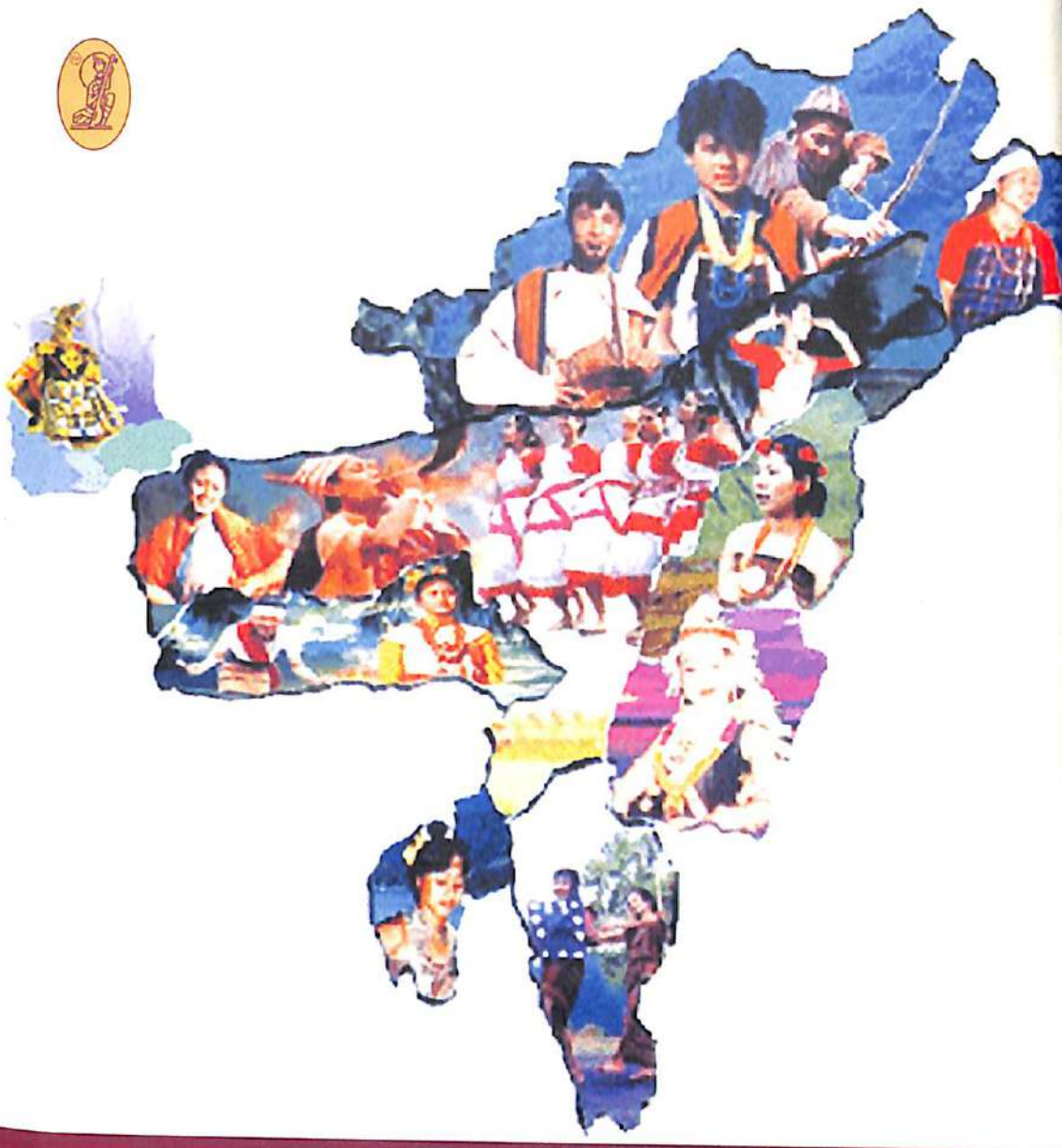

# पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय साहित्य

सम्पादक
डॉ. अनुशब्द

# पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय साहित्य

# पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय साहित्य

सम्पादक
डॉ. अनुशब्द

सम्पादन-सहयोग
नन्दिता दत्त

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
शाखा
अशोक राजपथ, पटना 800 004
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710
www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com
sales@vaniprakashan.in
POORVOTTAR BHARAT KA JANJATIYA SAHITYA
*Edited by* Dr. Anushabd
ISBN : 978-93-5229-657-6
Criticism
© 2017 सम्पादक
प्रथम संस्करण
मूल्य : ₹450
इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।
सिटी प्रेस, दिल्ली-110095 में मुद्रित
वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

# सम्पादकीय

हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय और साहित्य अकादमी, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 'लोक और शास्त्र : जनजातीय साहित्य' विषय पर दिनांक 26 और 27 मार्च, 2015 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। यह हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय का पहला बौद्धिक अनुष्ठान था। इस संगोष्ठी के आयोजन का मुख्य उद्देश्य देश के विभिन्न भागों से आये विद्वानों एवं प्रतिभागियों को जनजातीय साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श के लिए अकादमिक मंच एवं माहौल प्रदान करना, जनजातीय साहित्य के नये पाठकों एवं लेखकों की तलाश करना और उनके अध्ययन-अध्यापन की जमीन तैयार करना था। वैसे भी पूर्वोत्तर भारत जनजातीयबहुल क्षेत्र है। यहाँ कई सारी जनजातियों का सदियों से साहचर्य एवं सहअस्तित्व रहा है। यह पुस्तक उन्हीं जनजातियों पर केन्द्रित आलेखों (संगोष्ठी में पठित) का संचयन है जो उनके सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को प्रस्तुत करते हैं। इन आलेखों के संचयन-क्रम में मैंने उनकी विषय-वस्तु को लगभग यथावत् रखा है। सभी आलेखों में जो विचार व्यक्त हुए हैं उनकी मौलिकता के लिए उनके लेखक ही पूर्णतः उत्तरदायी हैं।

जनजातीय या आदिवासी साहित्य किसी असभ्य या अशिष्ट समाज का साहित्य नहीं है बल्कि हमारे पुरखों का साहित्य है। हमारे पुराने समाज का साहित्य है। इसमें जीवन के विभिन्न प्रसंगों से प्राप्त अनुभवों एवं सत्यों की वास्तविक अभिव्यक्ति होती है। इसमें भावों की अभिव्यक्ति में किसी तरह का बनावटीपन नहीं होता बल्कि भावों का भदेसपन जनजातीय साहित्य की अपनी विशेषता है। इसलिए इस साहित्य की टेक्नीक एवं टेक्सचर में लोक की ज़्यादा उपस्थिति है, शास्त्र की कम।

लोक-साहित्य और शास्त्रीय साहित्य में सबसे बड़ा फर्क यह है की शास्त्रीय साहित्य जहाँ तराशे हुए भावों का साहित्य है वहीं लोक-साहित्य कच्चे, कुँवारे भावों का साहित्य है। शास्त्रीय ज्ञान के बोझ से मुक्त तथा छन्द और अलंकार की चिन्ता से रहित साहित्य है। यह किसी एक व्यक्ति द्वारा रचित साहित्य नहीं है। इस पर कोई व्यक्ति विशेष न तो कॉपीराइट का दावा कर सकता है और न ही रॉयल्टी या

ए.पी.आई का क्लेम ही कर सकता है। बल्कि यह तो जनता का, जनता के लिए और जनता से जन्मा साहित्य है। विशेष रूप से श्रमजीवी वर्ग द्वारा श्रम के दौरान सृजित साहित्य है। आदिवासी या जनजातीय साहित्य इसीलिए लोक के ज़्यादा नजदीक है, शास्त्र के नहीं। हालाँकि 'लोक एवं शास्त्र, एक दूसरे के विरूद्ध नहीं, परस्पर पूरक हैं। लोक, शास्त्र को दिशा प्रदान करता है जबकि शास्त्र उसे मर्यादित करता है। लोक बड़ा व्यापक है। उसमें सब कुछ सन्निविष्ट है। जनजातीय जीवन भी लोक का ही अनुषंग है, अपने रहन-सहन, रीति-रिवाज, पर्व-अनुष्ठान आदि की भिन्नता के साथ।'

भारत के जनजातीय समुदायों के बीच सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप में जनजातीय साहित्य प्रचलित रहा है। यद्यपि उनमें से बहुतों ने वर्तमान युग में लिपि को अपना लिया है और लिखित साहित्य का सृजन आरम्भ हो गया है। शिक्षित युवा लेखकों का भी जनजातीय साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान मिल रहा है, अतः इसकी प्रगति में इनकी अहम भूमिका है। आज बहुत-सी वाचिक साहित्यिक सामग्री को पद्धतिगत रूप से लिखित और प्रामाणिक रूप दे दिया गया है। इन जनजातीय साहित्यों की बहुमुखी सांस्कृतिक परम्परा ने दुनिया को एक अलग ही दृष्टिकोण से देखा है जो कि सम्बन्धित समुदाय और संस्कृति के इतिहास को दर्शाता है। एक तरफ इन समुदायों का साहित्य महा-भारतीय शास्त्रीय परम्परा से उत्पन्न हुआ है और वह अपने में पौराणिकता लिए हुए है तो दूसरी तरफ उन जनजातीय साहित्यों में एक सीमा तक वाचिकता एवं शास्त्रीयता दोनों का समन्वय भी है।

बहरहाल, जनजातीय साहित्य इस ब्रह्माण्ड में हमारे अस्तित्व को जानने-समझने की वृहत् अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। हालाँकि इसकी बारीकियों एवं साहित्यिक सम्पदा को पूरी तरह से आलोक में लाना अभी शेष है।

अब दो-चार अपरिहार्य शब्द आभार-ज्ञापन के भी। इस प्रसंग में मैं सबसे पहले अपने बौद्धिक आइकन और तेजपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मिहिर कान्ति चौधुरी के प्रति पूरी निष्ठा से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन को स्वीकृति प्रदान की। उनके प्रबुद्ध निर्देशन एवं वत्सल मार्गदर्शन से ही पुस्तक-प्रकाशन की यह योजना साकार हो सकी है। इस सन्दर्भ में समकुलपति महोदय, कुलसचिव, उपकुलसचिव, संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं उप-पुस्तकालयाध्यक्ष का भी समय-समय पर उचित परामर्श और अपेक्षित सहयोग मिलता रहा। चयनित आलेखों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा नैतिक दायित्व है क्योंकि उनके विमर्शात्मक लेखों ने ही इस पुस्तक को यह रूपाकार दिया है। पुस्तक-प्रकाशन की योजना को मूर्त रूप देने में मेरे प्रिय छात्रों प्रवीण, उपेन्द्र एवं अंकुर का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके लिए वे निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं। इसकी संभाव्यता में पिता श्री शिवमंगल राय, पत्नी चारु गोयल और शिष्या नन्दिता दत्त का निर्व्याज सहयोग अविस्मरणीय है। पुस्तक के प्रकाशक श्री अरुण माहेश्वरी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली) का मैं विशेष रूप से ऋणी हूँ जिन्होंने अपनी व्यस्तताओं के बावजूद इस पुस्तक के प्रकाशन को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक जनजातीय साहित्य की अन्तर्वस्तु को सही परिप्रेक्ष्य में अवलोकित करने में सफल होगी तथा जनजातीय साहित्य को मुख्य धारा के साहित्य से जोड़ने का एक रचनात्मक माध्यम बनेगी। यदि यह पुस्तक प्रबुद्धजनों को जनजातीय साहित्य के पठन-सृजन के लिए किंचित भी उकसा सकी तो इसकी बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

28 मई, 2015

**अनुशब्द**
हिन्दी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय
तेजपुर-784028 (असम)
ई-मेल : anush@tezu.ernet.in; anushabda@gmail.com

# अनुक्रम


पूर्वोत्तर एवं मध्य भारत के आदिवासियों की परम्परा एवं उनके प्रश्न
*—रमणिका गुप्ता* 11

पूर्वोत्तर भारत की राभा जनजाति की साहित्यिक सम्पदा
*—डॉ. अच्युत शर्मा* 18

उपेक्षित प्रश्न : जनजातीय भाषा सर्वेक्षण, संरक्षण
*—प्रो. हेमराज मीणा 'दिवाकर'* 30

मिसिंग जनजाति की लोक संवेदना
*—डॉ. अनुशब्द एवं उन्मेषा कोंवर* 34

न्यीशी जनजाति की वाचिक परम्परा
*—डॉ. कुसुम कुंज मालाकार एवं चारु गोयल* 44

भूमंडलीकरण तथा असम प्रान्त की भाषाओं एवं बोलियों के अस्तित्व का संघर्ष
*—श्री कुल प्रसाद उपाध्याय एवं डॉ. जोनाली बरुवा* 50

लोक-साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय जीवन (बोडो, राभा और कार्बी जनजातियों के विशेष सन्दर्भ में)
*—पूजा शर्मा* 58

राजबंशी/गोवलपारिया लोकगीतों में कोच-राजबंशी जनजीवन
*—मरमी राय बरुआ एवं बर्णाली बरदलै* 73

असम के जनजातीय लोकनृत्य
*—डॉ. परिस्मिता बरदलै* 81

लोक-साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय जीवन (मिसिंग जनजाति के लोकगीतों के सन्दर्भ में)
*—मीरा दास* 86

पूर्वोत्तर के जनजातिय साहित्य में वैश्विक चेतना
*—मनोहरमयुम यमुना देवी* 96

कार्बी जनजीवन में लोकगीत : एक अध्ययन
*—डॉ. अब्दुल मान्नान* 99

असम के लोकजीवन और मौखिक साहित्य एवं वाचिक लोकविद्या में निविड़ सम्पर्क
*—कंकणा सैकीया एवं गीतिका सैकीया* 107

असमिया जनजीवन में लोककथाओं की भूमिका
*—श्रीमती जोनटि दुवरा एवं सुमन गगै* 120

तिवा जनजाति का समाज और संस्कृति
*—जुपिटा पाटर* 127

पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय भाषाओं का साहित्य
*—मीनाक्षी देवी* 133

असम के समकालीन सांस्कृतिक समाज जीवन में नृगोष्ठीय चाह जनगोष्ठी की भूमिका
*—श्रीमती बर्णाली वैश्य* 138

लोकगीतों में जनजातीय जीवन : मिसिंग जनजीवन के सन्दर्भ में
*—मालविका शर्मा एवं कसीरा जहाँ* 145

जनजातीय समाज में नारी की स्थिति, मर्यादा, वेशभूषा और प्रसाधन सामग्री
*—करबी देवी* 155

असमिया लोकगीतों में जनजातीय जीवन
*—श्री रिनु बरा* 160

लोक-साहित्य और आदिवासी जीवन
*—अनुराधा क्षेत्री* 169

भारतीय लोकनाट्य रूपों में लोक-तत्व और शास्त्र
(असम के 'अंकिया' नाट की रंगधर्मिता के सन्दर्भ में)
*—मनोज कुमार सील एवं संदीप कुमार सिंह* 176

ठेंगाल कछारी जनजाति का तोरा चिरा त्योहार और उनका संस्कार गीत : एक अध्यय
*—डॉ. बाला लखेन्द्र* 182

# पूर्वोत्तर एवं मध्य भारत के आदिवासियों की परम्परा एवं उनके प्रश्न

## *(रमणिका गुप्ता का वक्तव्य)*

आदिवासियों के बारे में कई बातें कही जाती रही हैं। आदिवासी समाजों में भी कई विविधताएँ हैं। आदिवासी समाज कहीं मातृ-प्रधान है तो कहीं पितृ-प्रधान है, आदिवासियों में दोनों तरह के समाज मिलते हैं, जैसे—मेघालय में मातृसत्ता है। केरल के कुर्ग लोगों में भी मातृसत्ता है (हालाँकि वहाँ नम्बूदरीपाद लोगों में और ब्राह्मणों में भी मातृसत्ता है), और यहाँ (असम में) बोडो जमात में पितृसत्ता है, लेकिन अलग-अलग तरह से बँटवारे हैं। मेघालय में सारी सम्पत्ति छोटी लड़की को जाती है और छोटी बेटी ही सारे परिवार को पालती है, वही सारे परिवार की देख-रेख करती है। मिजोरम में पिता की सम्पत्ति बड़े पुत्र को जाती है और माँ की सम्पत्ति बेटी को जाती है। यहाँ माँ की सम्पत्ति का अर्थ पैतृक सम्पत्ति है। पिता अपनी कमाई हुई सम्पत्ति बेटों में बाँट सकता है और माँ अपनी कमाई हुई सम्पत्ति बेटियों में बाँट सकती है जबकि पैतृक सम्पत्ति स्वाभाविक रूप से बेटी को जायेगी। जैसा कि मैंने पहले भी कई बार लिखा है कि मेघालय में गणतन्त्र प्रागैतिहासिक काल से लागू है। वहाँ पर चुना हुआ मुखिया होता है और चुना हुआ मुखिया होने के बावजूद भी सारी चर्चा औरतों के चूल्हों के इर्द-गिर्द बैठकर होती है। लेकिन औरत ही वोट देने की अधिकारी नहीं है, यह भी एक विडम्बना है। भारत के विभिन्न आदिवासी समाजों में अलग-अलग परम्पराएँ देखने को मिलती हैं।

हम लोगों ने 44 आदिवासी भाषाओं का हिन्दी में अनुवाद करवाया है जिसमें उनकी लोककथाएँ भी हैं, उनकी कविताएँ भी हैं, कुछ उपन्यास-अंश भी हैं। कुछ आदिवासी उपन्यास भी हमने छापे हैं जिनमें एक मिजोरम का उपन्यास है और एक केरल के आदिवासी लेखक नारायण का मलयालम भाषा में लिखा गया उपन्यास भी है जिसे हमने हिन्दी में अनुवाद करवा कर छापा है। कहानियों की संख्या तो बहुत ही अधिक है। हाल ही में हमने झारखण्ड के सत्रह आदिवासी कवि, जो हिन्दी में भी लिखते हैं और अपनी भाषाओं में भी लिखते हैं, उनमें से हमने हिन्दी

# लोक-साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय जीवन

## *(मिसिंग जनजाति के लोकगीतों के सन्दर्भ में)*

मीरा दास

### भूमिका

विश्व के लगभग समस्त भागों में जनजातीय समुदाय का अस्तित्व है। साधारणतः जनजातीय समाज का सदैव वनों तथा नदियों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। यही कारण है कि जनजातीय समुदाय को जंगली, पहाड़ी तथा वनों में रहने वाले मानव समुदाय के रूप में परिभाषित किया जाता है।

'जनजाति' शब्द की उत्पत्ति तथा अर्थ के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं। जनजातियाँ प्रायः शहरी सभ्यता से दूर जंगलों, घाटियों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती आयी हैं, इसलिए समाज उन्हें आदिवासी समझते हैं, जो पिछड़े वर्ग तथा 'असभ्य मानव समूह' के रूप में मान्यता देते हैं। जनजातियों के सम्बन्ध में समाजशास्त्रियों का मत यह है कि वे नीग्रोटी, अष्ट्रिक तथा गोदावरी के बीच, उत्तर-पूर्व भारत के पहाड़ी तथा नदी के तटों तथा दक्षिण भारत के पश्चिमी भागों में बस गये।

### पृष्ठभूमि

पूर्वोत्तर भारत के जनजातीय लोगों में बोडो, कछारी, चुतीया, डिमाछा, आहोम, कोच, मिसिंग आदि उल्लेखनीय हैं। जनसंख्या के आधार पर देखा जाये तो मिसिंग जनजाति दूसरे स्थान पर है। यह जनजाति घुमक्कड़ थी तथा अपनी सुविधा के अनुसार स्थान परिवर्तन कर लेते हैं। इसलिए मिसिंग जनजाति के लोग असम में ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बहुत विस्तृत क्षेत्र में निवास करते हैं। असम के अतिरिक्त अरुणाचल प्रदेश के कुछ भागों में मिसिंग जनजाति के लोग रहते हैं। ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे सदिया, जुनाई, डिब्रूगड़, सोनारीघाट, दिसांगमुख, मातमरा, माजुलि, लोहितमुख, टेकेलिफुटा आदि स्थानों पर मिसिंग लोगों के आवास हैं। इसके अलावा



धेमाजी ज़िले के जुनाइमुर्कगसेलेक, लाईमेकुरी, सिलापथार, कुलाजान, ढकुवाखाना, धिलामारा, बगीनदी, नारायनपुर साथ ही शोणितपुर और शिवसागर ज़िले में भी मिसिंग लोग निवास करते हैं। आज कामरूप ज़िले के गुवाहाटी में भी मिसिंग लोग बसने लगे हैं। यहाँ जनजाति पाग्र दाम्बुक, मयिङ, सायाङ, तेमेरा, सामुगुरिया आदि कई शाखाओं में विभक्त है।

### प्रस्तावना

लोक-साहित्य लोकजीवन की सहज भावाभिव्यक्ति है अतः उसमें लोगों के हर्षोउल्लास, हास-परिहास, विषाद-पीड़ा, सुख-दुःख, जय-पराजय, ज्ञान-विज्ञान, चिन्तन-मनन सभी कुछ अभिव्यक्त होता है। जहाँ इन सभी स्थितियों और मनोदशाओं को अपनाया जाता है, उन्हें लोक-साहित्य कहा जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के जितने संस्कार विधान हैं उन सभी संस्कारों के अवसर पर गीत गाये जाते हैं। ऋतुओं के कारण प्रकृति में परिवर्तन दिखाई पड़ता है, जिसके कारण उल्लास या आनन्द की अनुभूति होती है, जो लोक-साहित्य तथा गीतों में प्रकट होती है। स्त्री, पुरुष, बच्चे, जवान, बूढ़े सभी लोगों की सम्मिलित सम्पत्ति लोक-साहित्य है।

अन्य जनजातियों के समान मिसिंग लोक-साहित्य में भी बहुमुखी विषयों का समावेश है। इन विषयों में लोकगीतों का प्रमुख स्थान है। लोकगीत लोकजीवन की वास्तविक भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। इनमें मनुष्य के पारिवारिक, सामाजिक जीवन आदि का सामयिक तथा भावात्मक चित्रण रहता है। इन लोकगीतों का विभाजन विभिन्न दृष्टियों से किया है। जीवन के रुभी पहलुओं तथा परिस्थितियों में मनुष्य के मानसिक तथा शारीरिक व्यवहार जैसे भी होते हैं; उनका यथार्थ चित्रण इनमें मिलता है। हर जाति के अपने लोकगीतों से जनजीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति होती है, जैसे—काम के बोझ को हल्का करना, मनोविनोद करना आदि। मिसिंग जनजाति में भी लोकगीत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। लोकगीत प्रायः अलिखित होते हैं। उनका प्रचार और प्रसार मौखिक रूप में होता है। मिसिंग लोकगीतों की परम्परा बहुत प्राचीन है। यह भाषा तिब्बत-बर्मी मूल की है। इस भाषा पर असमिया भाषा का भी काफी प्रभाव है। मिसिंग लोग घुमक्कड़ होने की वजह से उनकी भाषा तथा रीति-रिवाज में भिन्नता है तथा इनके लोकगीतों में भाषागत और लयगत भेद भी परिलक्षित होता है।

### पद्धति

साक्षात्कार पद्धति तथा सन्दर्भ ग्रन्थों का सहारा लिया गया है।

## आलोचना

लोकगीतों का वर्गीकरण सरल कार्य नहीं है। कारण लोकगीत मानवीय भावनाओं से जुड़े होने के कारण परिवर्तनशील होते रहते हैं। इसलिए लोकगीतों का गायन के आधार पर, गायक के आधार पर, विषय-वस्तु के आधार पर वर्गीकरण किया जा सकता है। ये गीत विशेष प्रकार के पेशे से सम्बन्धित व्यक्तियों के मन में जीवित रहते हैं। इस प्रकार सभी लोकगीतों को भी विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है–

1. ऋतु सम्बन्धी गीत
2. श्रम परिहार गीत
3. सामाजिक जीवन से सम्बन्धित गीत
4. पेशेवर गायकों के गीत
5. बच्चों के गीत
6. काबान
7. संस्कार गीत
8. भक्ति धर्म-दर्शन सम्बन्धी गीत
9. पुनर्जन्म सम्बन्धी गीत
10. सामयिक घटनामूलक गीत
11. आधुनिकता से प्रभावित गीत

### *1. ऋतु सम्बन्धी गीत*

मिसिंग लोकजीवन में चार ऋतुओं का अधिक महत्त्व है—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा और शिशिर। इनमें भी लोकगीतों में वसन्त और वर्षा महत्त्वपूर्ण है। मिसिंग समाज में वसन्त ऋतु में वार्षिक उत्सव में एक विशेष पूजा है जो 'आलि आइ लृगाङ, और 'पःराग' नाम से जाना जाता है। इन गीतों में प्रकृति का वर्णन इस रूप में किया जाता है कि इसमें व्यक्ति के मनोभाव आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूप में प्रकट हो जाते हैं। ये ज़्यादातर प्रेमालाप विषयक गीत होते हैं। वर्षाऋतु में मिसिंग लोग 'आमराग' के गीत गाते हैं ये गीत 'आहुधान' के कट जाने पर मनाये जाने वाले उत्सव में गाये जाते हैं। ये उत्सव ऋतु विशेष से सम्बन्धित होते हैं।

### *वसन्त ऋतु के गीत*

### *'अलि आइ लृगाङ'*

'आलि' का अर्थ बीज है, आई का अर्थ 'फल' और 'लृगाङ' का अर्थ रोपण करना,



इसलिए इस उत्सव को बीज रोपण का त्योहार भी कहा जाता है। इस उत्सव में नृत्य-गीत तथा खान-पान का आयोजन धूमधाम से किया जाता है। इस समय युवक-युवतियाँ मिलकर नाचते गाते हैं। जैसे–

*"भीःव नम् काः तपो लृगाङइ सःमान व,*
*मृमहर याःमेः पङ्नक कहो बारेयिदइया बोरकद्ला,*
*नक्को आमिग् काः नाम दो नक्को नापृपाड़ यिरनाम दो*
*उकको आसिन् मोःनाम् दीम् अइया लुबि दागृबतो।"*

यहाँ पर एक प्रेमी अपनी प्रेमिका को अपने दोस्तों के साथ घूमते देखना चाहता है, ताकि उसकी मुस्कान से अपने प्रति प्रेम का अनुमान लगाया जा सके।

### *पःरागः*

पराग मिसिंग लोगों का कृषि, कर्म से सम्बन्धित उत्सव है। इसका दूसरा नाम 'भःपुन' अर्थात पृथ्वी, पुनः पुष्पित होना है। यह उत्सव प्रमुख रूप से युवक-युवतियों का त्योहार है। इस उत्सव के लिए युवक-युवतियाँ एक समिति का गठन करते हैं। समिति का कार्य है 'दागूलृय' (पंक्तिबद्ध खड़े होना) पद्धति से पःरागः उत्सव के लिए धन एकत्र करना तथा जिसका उपयोग उत्सव मनाने के लिए किया जाता है। पःराग उत्सव एक सामूहिक उत्सव है जिसमें अइ निःतम' के गीत गाये जाते हैं। नाचते समय इस प्रकार से गाये जाते हैं–

"दोरृमि सितुङा तोरृमेक तोरृमाङो, कमबङ् आपपुनो रोयिब रोयावो पहर् को लाबूरे ओ गारसापो आजि ङ्ल लाबरेऔ गारृसाङ दुबनी।"

अर्थात् 'दोरमि' वृक्ष के किसलय और कम्बड़ के रंग-बिरंगे पुष्प ऋतु आने पर पंख फैलाकर खिलते हैं। हम उन पुष्पों की सुगन्ध लेकर आनन्दित होते हैं।

### *आमृराग्*

आमृराग् उत्सव प्रति वर्ष भाद्र महीने में मनाया जाता है। यह परिवार का व्यक्तिगत पर्व है लेकिन इसे सामूहिक स्तर पर प्रत्येक गाँव में मनाया जाता है। जनजातीय परम्परा नृत्यगीत के बिना पूरी नहीं होती। इस उत्सव में भी भोजन के बाद वाद्ययन्त्र पर नृत्य किया जाता है।

### *बहाग बिहू*

बहाग बिहू या वैशाखी असम का वसन्तोत्सव है। मिसिंग समाज का यह एक प्रमुख उत्सव है, जहाँ युवक-युवतियाँ विरह से परिपूर्ण गीत गाते हैं। युवक-युवतियाँ घर-घर जाकर नाचते-गाते हैं। इस अवसर पर असमिया मिश्रित भाषा में गीत गाते हैं–

*"गसर तले ऐ, मदार तले ए, आमार बिउ बतियाई जाय।*
*केरेला ऐ वेगिनाऐ, आमाल बिउ बतिगाई जाय ॥"*

***वर्षा ऋतु के गीत***

इस समय चारों दिशाओं में हरियाली छा जाती है। किसान हल-बैल लेकर खेत जोतते हैं, महिलाएँ आनन्दित होकर तथा रंग-बिरंगे वस्त्रों में सजकर तीज़-त्योहार मनाती हैं।

***बारहमासा***

मिसिंग लोकगीतों में बारहमासा गीतों का विशिष्ट स्थान है। बारहमासा गीत में बारहमासों का वर्णन है, इसलिए गीत काफ़ी लम्बे होते हैं। मिसिंग समाज में शिक्षा आरम्भ फाल्गुन मास से होता है और माघ मास में अन्त होता है। फाल्गुन महीने में जिस तरह से सेमल वृक्ष के रुई उड़ने लगती है, उसी प्रकार लोगों का मन भी उड़ने लगता है। चैत महीने के आगमन के साथ कोयल आदि पक्षी गीत गाने लगते हैं। वैशाख महीने में पेड़-पौधों पर नये पत्ते निकल आये 'गुतिःआःम' अर्थात् धान की फसल लहलहाने लगती है। आषाढ़ महीने में तेज़ वर्षा के कारण नदियों में बाढ़ आती है, जिसके कारण लोग ऊँचे स्थानों पर चले जाते हैं। सावन के महीने में फल पक जाते हैं, जो सभी लोग मिल-बाँट कर खाते हैं। भाद्र के महीने में 'पीःमुग्' नदी के किनारे फूलने वाले फूल हैं, जिनके खिलने से लोग 'देनदुन-देनृताक' नामक वाद्य बजाते हुए नाचते-गाते हैं। मिसिंग समाज में आश्विन माह में शरद ऋतु का आगमन होता है। कार्तिक मास के आगमन से लोगों के धान का भण्डार खाली हो जाता है, जिसके कारण लोगों का धान खरीदना आवश्यक हो जाता है। आघोण महीना आते-आते 'आमदाङ-आम्' नाम धान पक जाते हैं। तोते, कबूतर आदि पक्षी जब खेत चुगने आते हैं तब बच्चों को खेत की रखवाली के लिए भेजा जाता है। इसके बाद पोष माह आते-आते शीत का प्रकोप अधिक हो जाता है। इसलिए इनके गीतों में शीत में बचने के तरीके का भी उल्लेख किया गया है। माघ महीने में 'सृङक्ग-आलि' (एक प्रकार का आलू) खोद कर निकालते हैं तथा पूजा के बाद भूनकर खाते हैं। इस प्रकार मिसिंग लोकगीतों में बारहमासा के वर्णन में हर मास में होने वाले ऋतु परिवर्तन तथा जनजीवन के क्रिया-कलापों का वर्णन है।

***2. श्रम परिहार के गीत***

किसी कार्य को करने में जो श्रम होता है, उससे थकान महसूस होती है। मिसिंग जनजीवन भी अनेक प्रकार के श्रम से सम्बन्धित है, जैसे—खेती करना, चरखा चलाना, हल चलाना, बंसी डालना, धान काटना आदि। इन गीतों को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है—



***चरवाही के गीत***

मिसिंग समाज में बच्चे गाय, भैंस आदि पशुओं को चराने के लिए गाँव के आस-पास के चरागाह में ले जाते समय ऊब से बचने के लिए बच्चे गीत गाते हैं। जैसे—

*"आमः बो किरिङ काराङ*
*तायेः तक् किरिङ काराङ*
*बोलोः का-कइ कःलृङबृ गृद गृद।"*

यहाँ पर 'कःलृङ' मामा भूत सदृश डरावना नाम है, जिसकी काल्पनिक ध्वनि 'किरिङ् काराङ' है।

इस गीतों के अलावा बच्चे अन्य प्रकार के गीत भी गाते हैं, जिसे बालगीत या खेलगीत भी माना जाता है।

***बंसी डालने के गीत***

मिसिंग जनजाति के लोग मछली खाना बहुत पसन्द करते हैं। इसलिए बंसी डालकर नदी, पुखरी आदि में मछलियाँ पकड़ते हैं। इस अवसर पर वे लोग 'अइनिःतम' गाते हैं। जैसे—

*"आगेर माला गृकल अड़ पानदुङ् पानदुङ् अनुरुद,*
*अगर अलेक सरमन दुङ् कनक आइमान् करम् दुङ्।"*

इस गीत में 'लाङि' जाल के द्वारा मछली पकड़ने का उल्लेख है।

***हल चलाने के गीत***

मिसिंग जनजाति के लोकगीतों में बैलों के साथ भैंसों को भी हल में जोतने का उल्लेख है। इस सम्बन्ध में प्रचलित एक गीत में किसान कहता है कि मुझे मेरी प्रेमिका मिल जाये तो मैं बिना बैल के कुदाल चलाकर खेत बो दूँ।

*"गःरु अःलोम् लागिमाङ, मेनृजोग् आःलोम लागिमाङ*
*मोःनाम् अइनम् पाःमूल, कुयाब् तागला ददबतो।"*

***नाविक के गीत***

मिसिंग जनजाति के लोगों द्वारा नदी किनारों में बसने के कारण नाव का विशेष महत्त्व है। अतः प्रत्येक के घर में एक नाव अनिवार्य रूप से रखना है। वर्षा ऋतु के समय बाढ़ का प्रकोप देखा जाता है। इस समय कृषक द्वारा खेत से धान लाने, अन्य गाँवों में रहने वाले सगे-सम्बन्धियों से मिलने, मछली पकड़ने, माल ढोने का महत्त्वपूर्ण साधन नाव है। ये लोग नाव चलाते समय एकाकीपन को दूर करने के लिए लोकगीतों का सहारा लेते हैं। जैसे—

*"आनी आबुङ कनापो अलुलुङ रीवात् लाहिदाल*
*सिर जीवन तुर्नापे मोनाम् अइनम् लागिदाय।"*

यहाँ पर नायक कहता है–प्रिय जैसे ब्रह्मपुत्र नदी को पार करने के लिए नाव और पतवार चाहिए वैसे ही दीर्घ जीवन व्यतीत करने के लिए तुम्हारा संग अति आवश्यक है।

### चरखा गीत

मिसिंग क्षेत्र में सूत कात कर उससे कपड़े बुने जाते हैं। सूत कातने का काम तकली-चरखे पर होता है। मिसिंग महिलाओं के द्वारा बुने गये वस्त्र कलात्मक होते हैं तथा मार्ग में चलते समय भी उनको सूत कातते हुए देखा जा सकता है। एक लोकगीत में एक प्रेमी अपनी प्रेमिका से कहता है–हे प्रिया! मैं पहाड़ में कपास की खेती करूँगा। उस कपास से तुम अपने लिए 'गासेङ' तथा मेरे लिए 'गालुक' बनाना।

"तोली आदि दिदुतः सूपाक आद्ग इयेबः मक्कीब् सुमूलाङ् जःककीब् सुमूलाड़ गालुगोम्"

## 3. सामाजिक जीवन से सम्बन्धित गीत

समाज का निर्माण परिवारों से होता है। लोकगीत में समाज से सम्बन्धित गीतों का उल्लेख मिलता है।

### माता-पिता तथा सन्तान

मिसिंग लोकगीतों में माता-पिता के महत्त्व को व्यक्त किया गया है। मनुष्य के विवाह के उपरान्त पारिवारिक जीवन का प्रारम्भ तथा सन्तान का जन्म होता है। सन्तान जन्म के समय किस प्रकार गर्भावती महिला को कष्ट होता है। तथा जन्म के बाद बच्चे को नहलाया-धुलाया जाता, उन सभी प्रकरणों का उल्लेख लोकगीतों में पाया जाता है। समय-समय पर होने वाली विभिन्न पूजा तथा उत्सवों पर माता-पिता को नमस्कार किया जाता है।

### अन्य पारिवारिक सम्बन्ध

मिसिंग लोकगीत में सम्बन्धों का उल्लेख है, जिस पर कहा गया है कि भाई पर विश्वास नहीं किया जा सकता, कारण वह भी साथ नहीं देता। एक गीत में देवर नयी भाभी को, घर आने पर फूलों से बनी माला पहनाता है तथा 'बानूजि' सीढ़ी से चढ़ाकर उसको घर ले जाने को कहता है। मिसिंग जनजाति में विवाह न करने पर मृत्यु दंड तक देने का नियम है, जिसका लोकगीतों के ज़रिए वर्णन हुआ है।



## 4. पेशेवर गायकों के लोकगीत

मिसिंग समाज में पेशेवर गायकों के लोकगीत भी पाये जाते हैं। जिसमें 'मिबु' एक ऐसी संस्था है। 'मिबु', पुजारी, वैद्य तथा भविष्यवक्ता-ज्योतिषी होते हैं। देवी-शक्ति पूर्ण होने के कारण जब देवी-देवताओं का आह्वान करता है तो वे उसके शरीर में प्रवेश कर लोगों के दुःख दूर करते हैं। प्रत्येक वर्ष में होने वाले धार्मिक अनुष्ठान में 'मिबु' प्रमुख भूमिका का पालन करते हैं। इस प्रसंग में जो गीत गाते हैं, उसे 'आःबाङ् निःतम्' कहा जाता है। मिसिंग लोगों का लिखित इतिहास नहीं है। 'आः बाङ' गीतों में इनका इतिहास है। इन गीतों के साथ नृत्य भी करते हैं। जैसे–

*कोयुम् केनूमाङ्गी याः याङ्क।*
*के:र कामङो याः याङ्क॥*

'मिबु' ससम्मान आमन्त्रण पर ही किसी के घर में बाधा-विपत्तियों के प्रतिकार का विधान देता है।

## 5. बच्चों के गीत

बच्चों के लोकगीतों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है जिन्हें मनोरंजन, खेल तथा आनुष्ठानिक गीत कहा जाता है। मनोरंजन के गीत में बच्चे एकत्र होकर मन बहलाने के लिए गीत गाते हैं। बालक खेल-खेल में जीवन के विविध अनुभव प्राप्त करते हैं। बच्चों के इन खेल गीतों में सूर्य-चन्द्र, वाद्ययन्त्रों, गिनती का उल्लेख हुआ है। बच्चों के कुछ गीत ऐसे हैं जो विभिन्न पर्व-त्योहारों पर गाये जाते हैं। मिसिंग लृगाङ में 'दुम-दुम' करके ढोलक बजाकर बच्चे नाचते हैं।

### बच्चों से सम्बन्धित स्त्रियों के गीत

स्त्रियों के गीत में लोरी और प्रेमगीत उल्लेखनीय है। माँ, शिशु के रोने पर चुप कराने के लोरी गाती है। मिसिंग लोरी में परिवेश का सुन्दर चित्र अंकित हुआ है। मिसिंग माँएँ काम के लिए बाहर जाती हैं तब अपने किसी सम्बन्धी लड़कियों को बच्चे सम्भालने के लिए घर में रखती हैं। तब जो गीत गाते हैं, उन गीतों को 'कःनिःनाम्' कहते हैं।

मिसिंग लोकगीतों में प्रेमगीतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये गीत इस जनजाति की समाज व्यवस्था, संस्कृति और विचारधारा को अभिव्यक्त करते हैं। इन गीतों के गाने का समय नहीं है। किसी ऋतु तथा उत्सव पर ये प्रेमगीत गाये जाते हैं। इस प्रकार के प्रेमगीत समय के साथ बदलते रहते हैं।

## 6. काबान

काबान शब्द का अर्थ होता है रोना या विलाप करना। यह गीत प्रियजनों की मृत्यु

के समय गाते हैं। 'काबान' गीतों को भी अलग-अलग भागों में विभाजित किया गया है। जैसे–

1. योःब काबान गीतों में युवा हृदय की विरह-वेदना है, जो प्रेम में असफल होते हैं।
2. दःब काबान लोकगीतों में अविवाहित प्रेमी की विरह-वेदना छिपी होती है।
3. बनो काबान गीतों में मिलन में विफल प्रेमियों का दुःख प्रकाशित हुआ है।
4. तुम्ब काबान गीतों में जो बहुत कम समय में विधुर हो गये हों, उनका दुःख दर्द छिपा होता है।
5. पुमुसु काबान उन वृद्धों का है, जो भूतकाल की मधुर स्मृतियों को याद करके गाते हैं।
6. यामूनो काबान गीत नव-विवाहिता पुत्री के हैं, जो माता-पिता के घर से विदा होते समय गाती है।
7. दःयिङ् काबान उन प्रेमी-युगल के वर्णनात्मक गीत हैं जहाँ प्रेम में बलिदान होने की भावना का वर्णन है। 'गैला गाम', 'देउबर देनूतालि' इस प्रकार के लोकगीत है।

### *7. संस्कार गीत*

लोकगीत में संस्कार गीत महत्त्वपूर्ण हैं, जो धर्म से जुड़े होते हैं। इन संस्कार गीतों में विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार से सम्बन्धित गीत प्रसिद्ध हैं।

### *8. भक्ति धर्म-दर्शन सम्बन्धी गीत*

मिसिंग जाति विश्वास करती है कि शंकरदेव मूलतः मिसिंग सम्प्रदाय के थे। जो पूर्ण सत्य नहीं है। वैष्णव मत के प्रभाव से 'नामघर' को मिसिंग जनजाति ने मान्यता दी है। इन नामघरों में 'आतुतुला' या 'हातुतुला' के नेतृत्व में पूजा सम्पन्न की जाती है।

### *9. पुनर्जन्म सम्बन्धी गीत*

मिसिंग लोकगीतों में पुनर्जन्म से सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं। जहाँ भाग्य और हस्तलेखों का सहारा लिया जाता है।

### *10. सामयिक घटनामूलक गीत*

राजनीतिक, सामयिक परिस्थितियों का मिसिंग लोकगीत में चित्रण हुआ है। नेहरू के मरने पर तथा इन्दिरा गाँधी को हटाकर जब जनता दल शासन पर आया तब सहानुभूति मूलक गीत गाये जाते थे। गांधी जी के द्वारा भारत स्वतन्त्रता दिलाने की



बात मिसिंग लोकगीतों में कही गयी है तथा इसकी तुलना प्रेमी युवक और युवती द्वारा स्वतन्त्रता प्रदान करने से की है–

*"बारत सादिन बिननो माआत्म गान्दिबृ।*
*डम्मो सादिन् बिननो सुक्को सिसान् कनोबृ॥"*

### *11. आधुनिकता से प्रभावित गीत*

मिसिंग समाज के लोकगीतों में आधुनिकता का प्रभाव भी देखने को मिलता है। शिक्षा के प्रभाव के कारण लोकगीतों में शिक्षा सम्बन्धी गीत भी पाये जाते हैं। आधुनिक विज्ञान के आविष्कारों का ज्ञान होने के कारण गीतों में आधुनिक, वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

## उपसंहार

इस प्रकार देखा जाता है कि मिसिंग लोकगीतों में जीवन की अच्छी-बुरी अनुभूतियों और अभावों का यथार्थ चित्रण है। मिसिंग जनजाति में कई शाखा होने के कारण लोकगीतों में भी आचार-उच्चारण आदि में भिन्नता देखी जा सकती है। गीतों की परम्परा प्राचीन होते हुए भी धुन भिन्न प्रकार के हैं।

## सन्दर्भ

1. खड़ी बोली और मिसिंग लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. देवकान्त पांगिङ।
2. मिसिंग समाज-संस्कृतिर समीक्षाः डॉ. बसन्त कुमार दले।
3. मिसिंग जनजीवनः चित्त-विचित्रः पवन कुमार बरुवा।
4. लोक-साहित्यः स्वरूप और मूल्यांकनः डॉ. श्रीराम शर्मा।
5. मिसिंग संस्कृतिर आलोख्यः सम्पादक भृगुमणि।
6. जनजाति समाद एवं वनीय अन्तनिर्भरता डॉ. संजय शील।
7. असमिया जाति आरु संस्कृतिः सम्पादक डॉ. परमानन्द राजवंशी।